प्रस्तावना

भारतीय रिज़र्व बैंक का वार्षिक प्रकाशन – ''भारत में बैंकों से संबंधित सांख्यिकी सारणियां'' बैंकों के बारे में महत्वपूर्ण सूचना प्रदान करता है । इसमें बैंकवार एवं बैंक–समूह वार महत्वपूर्ण विषयों यथा देयताओं तथा आस्तियों, आय तथा व्यय, अनर्जक आस्तियां, वित्तीय अनुपात, कार्यालयों का स्थानिक वितरण, कर्मचारियों की संख्या, एवं प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों का अग्रिम विवरण जैसे विषयों का समावेश है । यह आकलित जमा, बैंकिंग प्रणाली के दायित्व, बैंकिंग प्रणाली की आस्तियां, निवेश, बैंक–ऋण, एवं सेक्टरवार तथा उद्योगवार कुल बैंक ऋण जैसे कुछ महत्वपूर्ण विषयों पर बैंक–समूहवार मासिक आंकड़ा प्रस्तुत करता है ।

यह प्रकाशन भारतीय रिज़र्व बैंक की स्थापना से पूर्व हीं शुरू हुआ । इसका पहला अंक तत्कालीन सांख्यिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा 1915 में प्रकाशित किया गया जिसमें 1914 के आंकड़ों का समावेश किया गया एवं जिसका प्रकाशन श्री. जी. फिनले शिरास, तत्कालीन, निदेशक, सांख्यिकी विभाग, भारत सरकार की देख-रेख में किया गया । यहां यह जिक्र करना समीचीन होगा कि प्रो. पी. आर. ब्रह्मानंद ने वर्ष 2001 में प्रकाशित अपनी पुस्तक ''मनी, इनकम, प्राइसेस इन नाइंनटींथ सेंचुअरी इंडिया'' को अन्य लोगों के साथ श्री. जी फिनले शिरास को समर्पित किया है । इस प्रकाशन की स्थापना को अविस्मरणीय बनाने के उपलक्ष्य में वर्ष 1915 में प्रकाशित इसके प्रथम संस्करण को इस खंड में पुन: स्थान दिया गया है ।

इसके प्रकाशन से संबंधित कार्य भारतीय रिज़र्व बैंक को वर्ष 1939 में सौंपा गया । सन 1941 में भारत सरकार द्वारा प्रकाशित अंतिम संस्करण जो श्रृंखला का पच्चीसवां संस्करण भी था में 1938 से संबंधित आंकड़े समाहित किये गये हैं । भारत रिज़र्व बैंक के तत्वावधान में यह पहली बार सन 1941 में प्रकाशित हुआ जिसमें 1939 एवं 1940 के आंकड़ों का समावेश हैं । भारत सरकार द्वारा प्रकाशित अंतिम अंक का मुख–पृष्ठ एवं भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा प्रकाशित प्रथम अंक का ''पूर्वरचित नोट'' जैसा कि ''भारत में बैंकों से संबंधित सांख्यिकी सारणियां 2005-06'' में पुर्नप्रस्तुत किया गया है को भी इस संस्करण में स्थान दिया गया है ।

भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा प्रकाशित यह संस्करण श्रृंखला का 64 वां अंक है । यदि हम तत्कालीन सांख्यिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा प्रकाशित संस्करणों को जोड़ दें तो यह श्रृंखला का 89 वां अंक है जो इस ऐतिहासिक प्रकाशन की तारतम्यता का द्योतक है ।

लगभग एक शताब्दी से जारी यह प्रकाशन इसके महत्व को उजागर करता है । यह पहले भारत सरकार एवं तदुपरांत भारतीय रिज़र्व बैंक से संबंधित अधिकारियों के कार्यों एवं समर्पण भावना को भी एक श्रद्धांजली है जिन्होंने इसके प्रकाशन में अपना योगदान दिया । इसी परम्परा का अनुकरण करते हुए श्रृंखला के वर्तमान संस्करण का प्रकाशन सांसूप्रवि के प्रधान परामर्शदाता डॉ. ए. एम. पेडगावकर, एवं परामर्शदाता डॉ. बलवंत सिंह की मार्गदर्शन में प्रकाशित किया जा रहा है ।

मुझे विश्वास है कि अपने गौरवपूर्ण अतीत के अनुसार ''भारत में बैंकों से संबंधित सांख्यिकी सारणियां'' का वर्तमान संस्करण भारतीय बैंकों के लिए सूचना का महत्वपूर्ण श्रोत साबित होगा । इसके प्रकाशन के लिए गठित टीम का नेतृत्व श्री. वी. बहुगुणा, निदेशक ने अपने सहयोगियों, डॉ.एन. के. उन्नीकृष्णन - सहायक परामर्शदाता, श्री. भास्कर बिराजदार – अनुसंधान अधिकारी, एवं श्रीमती शोभा ए. परब - सहायक प्रबंधक के समर्थ सहयोग से किया । इस कार्य में उनका सहयोग श्रीमती एफ. के. काजी - सहायक प्रबंधक, एवं श्रीमती पी. वनमाली – डाटा प्रोसेसिंग सहायक ने किया ।

यह खंड इसके गौरवशाली परम्परा को कायम रखनें में सहयोग प्रदान करनेवाले पूर्व एवं वर्तमान के सभी लोगों को अर्पित है ।

दीपक मोहंती
कार्यकारी निदेशक

18 नवंबर 2009